[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3469

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मालवी लोकगीतों में संगीत

प्रो. अर्चना भट्ट सक्सेना
शा. कला विज्ञान महा. रतलाम

भारतीय लोक जीवन सदैव संगीत मय रहा है। भारत वर्ष का कोई अंचल कोई जाति ऐसी नहीं जिसके जीवन पर संगीत का प्रभाव न पड़ा हो। भारतीय संगीत के लिए कहा जाता है कि साहित्य से ब्रह्म का ज्ञान और संगीत से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। भारत में पुरातन काल से विभिन्न पर्वो एवं अवसरों पर गायन, वादन व नृत्य की परंपरा रही है। लोकगीत प्राचीन संस्कृति एवं सम्पदा के अमिट वरदान है जिसमें अनेकानेक संस्कृतियों की आत्माओं का एकीकरण हुआ है। लोक संगीत जन–जीवन की उल्लासमय अभिव्यक्ति है। पद्म श्री ओंकारनाथ के मतानुसार–

''देवी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि लोक संगीत है। जिस देश या जाति का सम्वेदनशील मानव जिस समय अपने हृदय के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए उन्मुख हुआ उसी अवसर पर स्वयंभू स्वर, लय, प्रकृत्या उनके मुख से उद्भूत हुए और उन्हीं स्वर, गीत और लय को नियम बद्ध कर उनका जो शास्त्रीय विकास किया गया वही देशी संगीत बना।''

लोक गीतों में शब्द एवं भाव–सौन्दर्य की अपेक्षा कंठ से निसृत स्वर एवं भाव–ध्वनियों का विशेष महत्व है। लोकगीतों की मौखिक परम्परा में जिन गीतों का अस्तित्व अधुनातनकाल पर्यन्त विद्यमान है उसका कारण ही है श्रवण रूचिर–स्वर लहरियों का आर्कषण– जिन गीतों की गायन शैली अधिक सरल एवं मधुर होती है उनका प्रभाव जनमानस पर निरन्तर बना रहता है। संवेदनशील मानव हृदय के भाव सहजतः मुख से अभिव्यक्ति होते है। स्वर एवं लयबद्ध हो जाने के पश्चात् एक निश्चित ''धुन के साथ'' गेय पद्धति में प्रकट ये भाव ही गीत बनते है। गीतों के मूल में होती हैं– लोक धुनें । ये लोक धुनें ही गीत को कर्णप्रियता व मधुरता से ओतप्रोत करता है। इन लोक धुनों की संख्या मालवा अंचल में असीमित है। ये लोकधुनें निसर्ग सिद्ध है। इन्ही लोकधुनों में भारतीय संगीत के अनेक राग छिपे हुए हैं। शास्त्रीय संगीत एवं विभिन्न राग रागिनियों का विकास लोक धुनों में व्याप्त स्वरों पर आधारित है। मालवी एवं अत्य प्रांतो की लोकधुनों को लेकर शास्त्रीय संगीत के क्रमिक विकास का अध्ययन करने में कुमार गंधर्व ने विशेष प्रयास किया है। उनकी खोज के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत का विकास और सौदर्य लोकधुनों से व्याप्त है। लोकधुनों में शास्त्रीय संगीत का ज्ञान होता है। कुछ नई धुनें ऐसी भी हैं जिनके द्वारा नवीन रागों का निर्माण किया जा सकता है।[1]

मालवा अंचल के लोकगीतों में प्रभाती से रात्रि के अंतिम प्रहर पर्यन्त दैनिक जीवन में लोक धुनें व्याप्त हैं। जन्मोत्सव से लेकर समस्त संस्कारों में अनुकूल भावों के संगुम्फन में लोक संगीत घुला मिला है। लोक संगीत की यह निर्झरणी मालव अंचल में बृहद रूप से व्याप्त है इसीलिये मांगलिक व शुभ अवसर गीत संगीत कि मधुरता के साथ संपन्न होने की परंपरा दृष्टिगत होती है।

मालवा अंचल के लोक जीवन में अभाव कम रहे है। धन–धान्य से पूरित इस प्रदेश में आकांक्षाएँ सदैव धरती और उसके वैभव से बँधी है। आनन्द जन्य, आनन्द पूरित और आनन्द अपेक्षित जीवन ने त्यौहारों, उत्सवों और सामूहिक पूजन–अर्चन के समय लोक संगीत को एक सबल व सुंदर माध्यम के रूप मे अपनाया है। लोक में जीवन चरित्र कथन के प्रसंग अंतर्गत दूहा पद्धति अधिक प्रचलित है। यह पद्धति लंबे कथन को एक इकाई प्रदान करने के लिए संगीत में ''विलंबित'' के साथ ही ''द्रुत'' के लिये भी ज्यादा उपयोगी समझी गई है। द्रुत कथन का उपयोग प्रार्थना, पूजा व अभ्यर्थना परक गीतों में भी देखा जा सकता है। इन गीतों मे संगीत हेतु सौम्य वाद्य यंत्र जैसे इकतारा, हारमोनियम, ढोलक, तबला व मंजीरे आदि का उपयोग हुआ है। शौर्य परक वर्णन मे वीरोचित अभिव्यक्ति हेतु तैय्यार संगीत रचनाओं में द्रुत गति को निबद्ध करने वाले प्रमुख ताल वाद्य ढोल, नौबत, झांझ, थाली, खंजडी, मजीरे, तबला व करतल ध्वनि आदि है। नवरात्र, रातीजगा, मान–मन्नत, गंगाजली व अन्य धार्मिक आयोजनों में इन वाद्यों को मुख्य रूप से ''एक ताल'' निबद्ध रचनाओं के लिये प्रयोग किया जाता है।

लोक संगीत का स्त्रोत मूलतः शास्त्रीय संगीत है। सात स्वरों का आरोह–अवरोह संगीत की धरोहर है। राग भूप का लोक संगीत में प्रयोग प्रचुर है। मालवा के समस्त लोक संगीत में लगभग समस्त प्रचलित रागों का उपयोग हुआ है। इतना ही नहीं लोक धुनों में विशेष राग के मूल स्वरों को लेकर अन्य राग–रागिनियों का निर्माण कर प्रदेश एवं जनपद विशेष की गान

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पद्धति के आधार पर उनका नामकरण अंचलों के लोक संगीत की महती पहचान है। ''राग मालव, राग सोरठ, राग गुर्जर, गान्धार, भोपाली, सिंध भैरवी, गौड़ सारंग आदि राग जनपदीय लोकधुनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मालवा जनपद के लोक संगीत में विशेषतः प्रेम, भक्ति, अनुराग, करूणा एवं उल्लास आदि मानव जीवन की अनेक भावनाएँ तरंगित हुई हैं। सुख–दुख एवं आनन्द–उल्लास के भावों को प्रकट करने वाले इन लोकगीतों के शब्द संगीत की स्वर माधुरी के सहारे अनूठी रसमयता उत्पन्न करने की क्षमता रखते है।

मालवी लोकगीतों में संगीत की अनुपम माधुरी से ओतप्रोत कतिपय गीत इस प्रकार है–

मालवी के 'मायरा' के सर्वाधिक लोकप्रिय गीत में संगीत की स्वर माधुरी से सिक्त निम्नलिखित गीत मनोरम काव्य को प्रकट करता है–

गाडो तो रडक्यो रेत में रे वीरा, गगना उडे रे गुलाल।
चालो उतावल घोरडी रे, म्हारी बेन्या जोवे वाट.....

इसी प्रकार 'सेवरे' का निम्न गीत भी संगीत की लय माधुरी की दृश्टि से मालव अंचल में प्रसिद्ध लोकगीत है–

जोसिड़ा री गलियाँ होय निसरया ए मालनी
राजाजी री गलियाँ होय निसरया हो मालनी

'गंगाजल' के अधिकांश गीतों में गेय स्वरों की मधुरता के कारण गीतों की लयात्मकता अत्यंत ही रोचक लगती है यथा–
नाना कावडिया रे वीर, जल भर लायो सोरम घाट को.....

X X X
सीसा की पागाँ अद्घणी रे भई, गंगाजी की जै बोलो
जे बोलो गंगामाई की जै बोलो, घरे आया गंगाजी
का साथ गंगाजी की जै बोलो

X X X
गंगाजी ने केजो हो राज गंगोजा आवे पावणां....
इसी प्रकार राग 'मेघ–म्हार' की कल्पना करने वाले ने अवश्य ही इन लोकगीतों के भावनामय स्पन्दन को समझा होगा। मेघो के प्रति आत्मीयता की भावना का प्रदर्शन लोकगीतों की रागात्मक संवेदन शीलता का घोतक है–
झूक जा बादली बरसी जा मेह, पानी बिन पडे यो काल
नदी नाला सूखी र्या, सूखे म्हारा हरा निपज्या खेत....
रमझम रमझम बरसो म्हारा इन्दर जी, बद्ल यो ऊचो चढ़ायो रे

X X X
नीम निम्बोली पाकी सावन मइनो आयो जी
उठो उठो म्हारा वाला लीलडी पलाणो जी
तमारी तो पारी बेन्या सासरिया में झूले जी
झूले तो झूलवा दीजो अबके सावन लावा जी...

कार्तिक मास में प्रभात के समय स्नान के लिये जाती हुई महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीत –झूमर' में हृदय की संवेदना ढल कर आती है। कृष्ण की जीवन गाथाओं में मानव जीवन का यथार्थ हृदय के रागों का प्रक्टीकरण, माधुर्य भावना के साथ लोक संगीत में उर्मिल हो उठती है–

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

त्हाने लादी से तो दीजो ओ नन्दलाल कुंवर
न्हावता झूमर म्हारी गम गई....
एक 'सती–गीत' में –'सायब' (प्रियतम) से दूरी पड़ने की करूणा राग पीलू के स्वरों में संपूर्ण मालव अंचल में गाई जाती है–

सायब को डोलो.....
माथा ने भम्मर घड़ावो रे सेवग म्हारा
सायब को डोलो चन्दण नीचे ऊबो
चन्दण नीचे ऊबो, चमेली नीचे ऊबो
सायब से छेटी–मती पाडो रे सेवग म्हारा
साबय को डोलो चन्दण नीचे ऊबो
बइय्यन ये चुड़लो चिरावो रे सेवग म्हारा
सायब को डोलो....
झबिया रतन जड़ावो रे सेवग म्हारा
सायब को डोलो...

मालव जनपद के लोक संगीत में प्रेम, भक्ति, अनुराग, करूणा एवं उल्लास आदि मानव जीवन की अनेक भावनाएँ तरंगित हुई है। मालवा की लोक धुनों का प्रतिनिधित्व करने वाला 'मालव राग' यद्यपि आज प्रचलित नहीं है फिर भी इस राग के अस्तित्व का इतिहास मालव के लोक संगीत की स्मृति को उभार देता है। तेरहवी शताब्दी में मालव राग का प्रचलन था। जयदेव के गीत गोविन्द में इसका संकेत मिलता है। दक्षिणात्य संगीत के विवेचक पाल्कुरि संकेत मिलता है। दक्षिणात्य संगीत के विवेचक पाल्कुरि के सोमनाथ ने एक सो ग्यारह जनवदीय रागों की सूची में मालवी (51) और मालव (91) का उल्लेख किया है। आज मालवा में प्रचलित लोकगीतों में संगीत की जो अभिव्यक्ति है वह भावनाओं के उद्रेक के साथ रस की सृष्टि करने के लिये र्प्याप्त है। सुख–दुख एवं आनन्द–उल्लास के भावों को प्रकट करने वाले लोकगीतों के भाब्द संगीत की स्वर माधुरी के सहारे रस उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं।

ताल दादरा, रूपक, कहरवा, एकताल, दीपचन्दी, लोकगीतों में संगत स्वरूप स्पष्टतः प्राप्त होते है। मध्य एवं द्रुत लय का बाहुल्य भी प्राप्त होता है।

लोकगीतों की आत्मा लोक संगीत है। अतएव गीतों के संरक्षण के साथ ही साथ उनकी आत्मा (संगीत) की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक हैं।

सन्दर्भ –

1 लोक संस्कृति – वसन्त निरगुणे
2 मध्य प्रदेश का लोक संगीत – शरीफ मोहम्मद
3 लोक साहित्य की भूमिक – डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय
4 भारतीय आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में गढ़वाली लोक संगीत – डॉ. तुष्टि मैठानी
5 सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति अंक)